P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-1* (Part-1) September- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

राजस्थान में पर्यावरण पर्यटन–समीक्षात्मक अध्ययन (मरू जिले–बीकानेर के परिप्रेक्ष्य में)

श्रवण कुमार प्रजापत
शोधार्थी,
बी.एम. (वाणिज्य) विभाग,
महाराजा गंगासिंह
विश्वविद्यालय,
बीकानेर, राजस्थान

संजीव बंसल
सहायक आचार्य
वाणिज्य विभाग,
श्रीमती नर्बदा देवी बिहाणी
राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, नोहर,
हनुमानगढ़, राजस्थान

सारांश

''मनुष्य अपने वातावरण की उपज है'' यह कथन इस बात की पुष्टि करता है कि मानव जीवन वातावरण से प्रभावित होता है। पर्यावरण उन निकटवर्ती दशाओं से मिलकर बना है जो व्यक्ति अथवा समुदाय के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक व सांस्कृतिक जीवन को प्रभावित करती है, ये दशाएं प्राकृतिक अथवा कृत्रिम हो सकती है।

पर्यावरण का पर्यटन से घनिष्ट सम्बन्ध रहा है। पर्यटन पर्यावरण को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। स्वच्छ पर्यावरण पर्यटन को बढ़ावा तथा प्रदूषित पर्यावरण पर्यटन को हतोत्साहित करता है।

राजस्थान का मरू जिला–बीकानेर पारि–पर्यटन की दृष्टि से अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है, यहाँ कोलायत झील, गजनेर झील, जाड़बोड़, कोडमदेसर, लाडेरा व बजरंग धोरा पारि पर्यटन के कारण अपनी विशिष्ट पहचान बनाऐं हुए है। यहाँ के बालू रेत के टीले, रेगिस्तानी वन, झाड़ियाँ, गिद्ध, खरगोश, चिंकारा, व लोमड़ी देशी–विदेशी पर्यटको को अपनी ओर आकृष्ट कर मन मोह लेती है।

बीकानेर संभाग का सबसे बड़ा जिला–बीकानेर ऐतिहासिक व धार्मिक पर्यटन में ही नहीं अपितु पारि–पर्यटन में भी फला–फूला है। परन्तु इस उज्ज्वल छवि का दूसरा दुखद पहलू यह भी है कि पर्यटकों की अपार भीड़ राजस्व व आय तो बढ़ाती है, परन्तु जल, भूमि तथा वायु प्रदूषण के द्वारा पर्यावरण को क्षति पहुँचाते हैं।

पर्यावरण को पर्यटको के माध्यम से होने वाली क्षति से बचाने के लिए पर्यटको को जागरूक करने के साथ–साथ स्थानीय लोगो, राज्य सरकार व केन्द्र सरकार द्वारा दिशा–निर्देश जारी कर पर्यावरण संरक्षण में योगदान देना चाहिए।

मुख्य शब्द : पर्यावरण, अजैविक तत्व, प्रदूषण

प्रस्तावना

किसी भी जीवधारी या पारितंत्रीय समूह को प्रभावित करने वाले भौतिक, रासायनिक एवं जैविक कारकों की समष्टिगत इकाई पर्यावरण कहलाता है।

सामान्य अर्थों में यह हमारे सम्पूर्ण जीवन को प्रभावित करने वाले जैविक और अजैविक तत्वों, तथ्यों, प्रक्रियाओं घटनाओं के समुच्चय से निर्मित इकाई है। यह हमारे चहुँ ओर आच्छादित है और मानव समाज की प्रत्येक घटना इसी के भीतर सांगोपांग सम्पादित होती है। हम मनुष्य भी अपनी दैनिक, सामाजिक, राष्ट्रीय क्रियाओं से इस पर्यावरण को भी प्रभावित करते हैं। अतः एक जीवधारी और उसके पर्यावरण के बीच अन्योन्याश्रय संबंध भी होता है।

पर्यावरण के जैविक तत्वों में सूक्ष्म जीवाणु कीट सभी वर्गीकृत जन्तु और संपूर्ण पादप जगत आ जाते हैं। साथ ही उनसे जुड़ी हुई सारी जैविक क्रियाएं और प्रक्रियाएं भी पर्यावरण का जैविक संघटक होती है। अजैविक तत्वों में मृदा, जलवायु, जीवन दायिनी नदियाँ प्राकृतिक संपदाओं के स्त्रोत पर्वत, विविध चट्टाने, रेतीले टीले, पवन, सागर, झीलें, मनोरम झरनें आदि सम्मिलित होते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

1. मरू क्षेत्र बीकानेर को पारि–पर्यटन की दृष्टि से विकसित करने के लिए राज्य सरकार व केन्द्र सरकार का ध्यानाकर्षण करना।
2. पर्यावरण संरक्षण के लिए स्थानीय लोगों में जागरूकता लाना।
3. मरू क्षेत्र बीकानेर में पारि–पर्यटन से सम्बन्धित रोजगार अवसरों को तलाशना।

4. पारि–पर्यटन से उद्यमिता विकास की जानकारी उपलब्ध करवाना।
5. मरू क्षेत्र बीकानेर के प्रमुख पारि–पर्यटन स्थलों की देशी–विदेशी पर्यटको को जानकारी उपलब्ध करवाना।

परिभाषाएं

1. पर्यावरण अधिनियम, 1986 की धारा 2(क) के अनुसार– ''पर्यावरण में वायु जल, भूमि, मानवीय प्राणी अन्य जीव, जन्तु, पौधे और उनके मध्य विद्यमान अन्तर्सम्बंध सम्मिलित है।
2. वैबस्टर शब्द कोष के अनुसार – '' पर्यावरण से आशय उन घेरे रहने वाली परिस्थितियों, प्रभावों और शक्तियों से है जो सामाजिक और सांस्कृतिक दशाओं के समूह द्वारा व्यक्ति या समुदाय के जीवन को प्रभावित करती है।''
3. दी यूनिवर्सल एनसाइक्लोपीडिया के अनुसार – ''उन सभी दशाओं, संगठन एवं प्रभावों का समग्र जो किसी जीव या प्रजाति के उद्भव, विकास एवं मृत्यु को प्रभावित करती है, पर्यावरण कहलाती है।''
4. फिटिंग (1922) ने सर्वप्रथम पर्यावरण को परिभाषित करते हुए कहा कि जीव के समस्त परिस्थितिक कारकों का पूर्ण योग ही पर्यावरण है।

इस प्रकार पर्यावरण उन निकटवर्ती दशाओं से मिलकर बना है जो व्यक्ति अथवा समुदाय के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक व सांस्कृतिक जीवन को प्रभावित करती है ये दशाएँ प्राकृतिक अथवा कृत्रिम हो सकती है।

पर्यावरण और पर्यटन

पर्यावरण और पर्यटन परस्पर एक दूसरे पर आश्रित है पर्यटन पर पर्यावरण का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। भारत में प्राचीनकाल के शैक्षिक एवं धार्मिक पर्यटन से वर्तमान के पर्यावरण पर्यटन का विकास कालखण्डों में हुआ है। आधुनिक पर्यटन काफी हद तक पर्यावरण आधारित है। हम कह सकते हैं कि पर्यटन में दो अन्योन्य क्रियाशील घटक सम्मिलित हैं – पर्यटन और पर्यावरण। पर्यटन का उद्देश्य कितना भी सौम्य क्यों न हो फिर भी स्थानीय पर्यावरण पर उसका कुछ–न–कुछ प्रभाव अवश्य पड़ता है। पर्यटन यदि कहीं भी जाकर भू–दृश्यों एवं वन्य जीवों का अवलोकन कर आनन्द प्राप्त करना चाहते हैं तो सामान्यतः वहाँ जाकर रूकते भी हैं।

पर्यटकों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कुछ मूलभूत सुविधाओं जैसे आवास, परिवहन, सुगमता एवं सम्पूर्ण आपूर्ति से संबंधित अवसंरचना की उचित व्यवस्था आवश्यक है। पर्यटकों के व्यवहार सहित ये सभी प्रक्रियाएं पर्यावरण पर किसी–न–किसी प्रकार दबाव डालती है। अतः प्रयास यह होना चाहिए कि इस दबाव के स्तर को न्यूनतम रखा जा सके ताकि पर्यावरण एवं परिस्थिति में स्थायी परिवर्तन न होने पाए।

स्वच्छ पर्यावरण पर्यटन को बढ़ावा देता है तथा प्रदूषित पर्यावरण पर्यटन को हतोत्साहित करता है।

मरू जिला– बीकानेर में पारि–पर्यटन व पर्यावरण

राजस्थान का मरू जिला–बीकानेर पारि–पर्यटन की दृष्टि से अन्य जिलों से अपेक्षाकृत कम फला–फूला है। परन्तु फिर भी पर्यावरण पर्यटन की दृष्टि से यह जिला अपना महम्वपूर्ण स्थान रखता है। बीकानेर जिले के कुछ ऐसे पारि–पर्यटन स्थल जो प्रकृति प्रेमी पर्यटकों को अपनी ओर आकृष्ट करते है जिनका विवरण निम्न प्रकार है :–

कोलायत झील

बीकानेर जिला मुख्यालय से पश्चिम में 50 किमी. दूर स्थित है कोलायत झील। बीकानेर जिले की मीठे पानी की सबसे बड़ी यह झील पारि–पर्यटन की दृष्टि से सदियों पूर्व से अपनी अतिविशिष्ट पहचान बनाए हुए है। यह पुरातन समय में सांख्य शास्त्र के प्रणेता कपिल मुनि की तपोस्थली हुआ करती थी इसी कारण इस झील में स्नान करना धार्मिक मापदण्डों के अनुसार भी अतिपावन माना जाता है। कार्तिक मास में विशाल सांस्कृतिक समागम रूपी मेले में भागीदारी हेतु देशी–विदेशी पर्यटकों का हुजुम उमड़ा करता है। झील के किनारे चित्ताकर्षक सुन्दर घाट बने हुए है जिनके किनारे पीपल, बरगद, कल्पवृक्ष आदि तरू इस झील के सौन्दर्य को एक अनुपम दिव्यता प्रदान करते हैं। झील में बड़ी मात्रा में नयनाभिराम कमल के पुष्प लगे हुए है जो इस पावन झील के श्रृंगार को श्रेष्ठता प्रदान करते हैं।

गजनेर झील व अभ्यारण्य

बीकानेर मुख्यालय से 32 किमी. दूर अवस्थित है– बीकानेर के सबसे प्रमुख यात्रा आकर्षणों में से एक गजनेर झील एवं अभ्यारण्य। पारि–पर्यटन के दृष्टिकोण से यह क्षेत्र अत्यन्त विविधता एवं समृद्धता समेटे हुए है यहाँ एक ओर रमणीय झील स्थित है जो विदेशी पक्षियों को भी आकर्षित करती है तो दूसरी ओर प्रकृति प्रेमी सैलानियों के लिए यह जगह स्वर्ग से कम नहीं है। यहाँ हिरण, नील गाय, चिंकारा, सूअर, रेगिस्तानी लोमडियाँ, बटबड पक्षी, जल मुर्गी, बतखें व अनेक प्रवासी पक्षी अपने क्रियाकलापों से यात्रियों को मंत्र मुग्ध कर देते हैं। साथ ही यहाँ अनेक छोटे–तालाब, वन, रेगिस्तानी झाड़ियाँ अपने अद्भुत प्राकृतिक छटा बिखेरते हैं जो हर प्रकार के पर्यटकों को अनायास ही आकृष्ट कर लेते हैं।

जोड़बीड़ प्राकृतिक स्थल

बीकानेर से 8 किमी. दूर यह क्षेत्र अपने आप में अद्वितीय विशिष्टता रखता है। यहाँ राष्ट्रीय ऊष्ट्र अनुसंधान केन्द्र भी स्थित है जो बीकानेरी, जैसलमेरी, कच्छी मेवाड़ी ऊँटों के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु कृत संकल्प है। यह देशी–विदेशी पर्यटकों के लिए अतिस्मरणीय, आनंददायक एक परिपूर्ण अनुभव प्रदान करता है। यहाँ पर्यटक ऊँटनी के दूध, दही, चाय, आइसक्रीम का लुप्त उठा सकते हैं यहाँ ऊँट की सवारी सफारी की बेहतरीन सुविधा उपलब्ध है। यहाँ दो कूबड़ वाला ऊँट भी सैलानियों के आकर्षण का केन्द्र रहते हैं, अश्व अनुसंधान केन्द्र व वन विभाग के संयुक्त तत्वाधान में जोड़बोड़ को इकोट्यूरिज्म हब के रूप में विकसित करने हेतु एक पैनोरमा भी बनाया जा रहा है। यह क्षेत्र एशिया का सबसे बड़ा एवं उपयुक्त क्षेत्र है गिद्धों हेतु यहाँ सितम्बर के अंत में विदेशों से गिद्ध आते हैं। ये गिद्ध यहाँ मार्च तक रहते है। यहाँ किंग वल्चर, यूरेशियन ग्रीफन, हिमालियन ग्रीफन, व्हाइट बैक्ड वल्चर, इजिप्शियन वल्चर

आदि प्रजातियाँ देखी जा सकती है। जोड़बीड़ को आई बी ए साइट घोषित करने के कारण यह नेशनल पार्क की तर्ज पर विकसित की जाएगी यहाँ अनेक शोधार्थी और वैज्ञानिक पक्षियों, सरीसृपों पर अनुसंधान करने यहाँ आते रहते हैं।

कोडमदेसर तालाब

यह बीकानेर से 24 किमी. दूर स्थित है यहाँ भैरूजी का अत्यन्त प्रसिद्ध पवित्र ऐतिहासिक मंदिर, शिलालेख–स्तंभ भी स्थापित है, यह क्षेत्र स्थानीय जनमानस में श्रद्धास्थल के रूप में विख्यात है। यहाँ का तालाब बहुत ही सुन्दर एवं सुरम्य है यहाँ भी अनेक प्रकार के पशु–पक्षी, स्वच्छन्द विचरण करते देखे जा सकते हैं। राजमार्ग से तालाब के मार्ग में एक छोटी नहर भी पड़ती है जो गर्मियों के दौरान यात्रियों के पिकनिक, स्नान, मौजमस्ती का बेहतरीन केन्द्र है। यहाँ कल्पवृक्ष तरू व कंटीली झाड़ियाँ देशी–विदेशी सैलानियों का मन मोह लेती है।

लाडेरा पारि–पर्यटन स्थाल

बीकानेर से 40 किमी. दूर मालासर के पास लाडेरा गाँव पारिपर्यटन की दृष्टि से अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है यहाँ कैमल सफारी, बालू रेत के ऊँचे–ऊँचे टीले देशी–विदेशी पर्यटकों के ध्यानाकर्षण का केन्द्र है। पर्यटन विभाग यहाँ हर वर्ष जनवरी माह में अर्न्तराष्ट्रीय ऊँट महोत्सव का आयोजन भी करता है। जिसमें सैलानियों का उत्साह एवं रोमांच देखते ही बनता है। उदय होते सूर्य की प्रखर रश्मियाँ जब यहाँ के धोरों की सुनहरी रेत में झिलमिलाती है तो इस आभा का सौन्दर्य केवल अनुभूत ही किया जा सकता है शब्दों में वर्णित नहीं।

बजरंग धोरा

बीकानेर मुख्यालय से 8 किमी. दूर धार्मिक पर्यटन के साथ–साथ पारिपर्यटन में अपनी अमिट छाप छोड़ने वाला सैलानियों का प्रमुख स्थल है। यहाँ के रेतीले टीले बच्चे, बुजुर्ग, युवाओं व महिलाओं के लिए मनोरंजक क्रीड़ा स्थल है। यह स्थान घने मरूस्थलीयें वृक्षों (नीम, खेजड़ी, रोहिड़ा व बबूल) व कंटीली झाड़ियों (कीकर, बेर, केर, खींप व फोग) के मध्य अवस्थित है जो प्रकृति प्रेमी पर्यटकों के लिए किसी समृद्ध कोष से कम नहीं है। यहाँ अनेक वन्य पशु–पक्षी यथा हिरण, नील गाय, लोमड़ी, खरगोश, गोह, गिरगिट रेगिस्तानी छिपकलियाँ, उल्लू व कबूतर, देशी–विदेशी पर्यटकों को प्रफुल्लित कर देते हैं।

अन्य पारि–पर्यटन स्थल

पारिस्थितिकी पर्यटन की मिसाल राजस्थान की इन्दिरा गाँधी नहर परियोजना विश्व के सम्पूर्ण मरूस्थलीय नहरों में सबसे बड़ी व विशाल है जो कि पर्यावरण का मुख्य आधार है यह नहर बीकानेर जिले के अनेक भागों को भी लाभान्वित करती है इस नहर के आस–पास के क्षेत्र की हरियाली व वन्य जीव पर्यटकों को घूमने फिरने व पिकनिक आदि के लिए बेहतरीन स्थल है। इसके अतिरिक्त कतरियासर व धुंपालिया के मनमोहक बालू रेत के टिब्बे व अनेक ताल–तलैया भी ग्रामीण पर्यटन मे अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम कह सकते हैं, बीकानेर संभाग का सबसे बड़ा जिला बीकानेर ऐतिहासिक व धार्मिक पर्यटन में ही नहीं अपितु पारि–पर्यटन में उत्कृष्ट स्थान रखता है। यह जिला अपनी पारिस्थितिकी पर्यटन की आह्लादित करने वाली मोहक–सौरभ से भारत ही नहीं बल्कि एशिया, यूरोप, अमेरिका पर्यटकों को मोहित कर रहा है।

परन्तु इस उज्ज्वल छवि का दूसरा दुखद पहलू यह भी है कि मेलों, महोत्सवों, विशिष्ट आयोजनों के अवसर पर पर्यटकों की अपार भीड़ राजस्व व आय तो बढ़ाती ही है परन्तु जल जैसे दुर्लभ मरूस्थलीय संसाधन की कमी भी करता है। अनेक बार पर्यटक प्लास्टिक आदि कचरा तालाबों, झीलों, धोरों के पास छोड़ जाते हैं जो उस स्थल की खूबसूरती पर बदनुमा दाग तो बनते ही है कई बार वहाँ की गाय, हिरण, पक्षी भी उस प्लास्टिक सड़े खाद्यान्न, जहरीले अपशिष्ट का भक्षण कर काल–कवलित हो जाते हैं। पर्यटकों की लापरवाही, नियमों की अवहेलना, ध्वनि प्रदूषण भी उस स्थल की पारिस्थितिकी तंत्र को उल्लेखनीय क्षति पहुंचाते हैं।

पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए स्थानीय लोगों व राज्य सरकार द्वारा सामूहिक प्रयास करने चाहिए। पर्यावरण को दूषित होने से रोकने के लिए समय–समय पर सेमिनार, संगोष्ठयाँ, आयोजन तथा साथ ही राज्य सरकार व केन्द्रिय सरकार द्वारा पर्यावरण संरक्षण संबधी दिशा–निर्देश जारी करते हुए देशी–विदेशी पर्यटकों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

आवश्यक है कि हम पर्यटन एवं पर्यावरण के मध्य अन्योन्य क्रियाओं को ठीक से समझे और उसके अनुसार अपने क्रियाकलापों में परिवर्तन करें। ताकि पर्यटन की क्रियाओं द्वारा पर्यावरण पर पड़ने वाले हानिकारक प्रभावों से पर्यावरण को सुरक्षा प्रदान की जा सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *पर्यावरण अध्ययन की रूप रेखा, मेघा तिथी जोश आर.बी.डी. पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली।*
2. *भारत में आर्थिक पर्यावरण, डॉ. बी.पी. गुप्ता, डॉ. एच. आर. स्वामी आर.बी.डी. पब्लिकेशन नई दिल्ली।*
3. *नेगी, जे. एम.एस. (1989) : पर्यटन एवं पर्यावरण।*
4. *मृदुला एवं दत्त, नारायण (1991) : ''पारिस्थैतिकी एवं पर्यटन'' यूनिवर्सल प्रेस दिल्ली।*
5. *शिव कुमार तिवारी : विश्व पर्यटन एवम् यात्रा उद्योग, 1986, आत्माराम एण्ड संस, नई दिल्ली।*
6. *पर्यावरण पर्यटन एवं लोक संस्कृति, ताज रावत (प्रेस)*